B.A. (Hons) Part II
Philosophy Paper III
Topic – Short Notes on Good and Evil.

Dr. Sachidanand Prasad.
Dept. of Philosophy.
R.R.S. College Mokama.

Good शब्द की उत्पत्ति जर्मन शब्द gut से हुई है जिसका अर्थ होता है – किसी लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक। इसप्रकार यह कहा जा सकता है कि जो भी किसी उद्देश्य या लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक हो, वह Good है। इसके ठीक विपरीत जो किसी लक्ष्य की प्राप्ति में बाधक हो वह bad या evil है। किसी नैतिक उद्देश्य या आदर्श की प्राप्ति में जो सहायक है वह नैतिक दृष्टि से शुभ और जो बाधक हो वह नैतिक दृष्टि से अशुभ कहा जाता है। Good और evil शब्दों का व्यवहार ~~[illegible]~~ और विशेषण और संज्ञा दोनों रूपों में होता है। भौतिक या आध्यात्मिक good या सापेक्ष या निरपेक्ष good आदि में good शब्द का प्रयोग संज्ञा के रूप में हुआ है। यहाँ इसका अर्थ है वह पदार्थ जिसकी इच्छा की गई है अर्थात वह पदार्थ जो हम चाहते हैं। जिस पदार्थ को

पाने की इच्छा की जाए वही शुभ हुआ। जैसे - स्वास्थ्य, समृद्धि इत्यादि। इसी प्रकार वह जिसे दूर करने की इच्छा न हो वह अशुभ है। जैसे - निर्धनता, बीमारी इत्यादि। लेकिन विश्लेषण के रूप में वह साधन शुभ है जिससे किसी उद्देश्य की प्राप्ति होती है इसलिए संज्ञा रूप में लक्ष्य रूप शुभ और विशेषण रूप में उस लक्ष्य की प्राप्ति का साधन शुभ है। इसी आधार पर शुभ के लक्ष्य रूप और शुभ के साधन रूप में भेद माना गया है। मनुष्य शुभ चाहता है अतः सुख शुभ है लेकिन सुख प्राप्त करने में धन एक साधन है अतः धन भी शुभ हुआ। यहाँ सुख शुभ है लक्ष्य के रूप में, धन शुभ है साधन के रूप में। इसीप्रकार मनुष्य धन चाहता है लेकिन धन प्राप्त करने का स्वास्थ्य एक साधन है इसलिए स्वास्थ्य साधन के रूप में शुभ हुआ। इसप्रकार शुभ, सापेक्ष और निरपेक्ष या सर्वोच्च दोनों होता है। कभी कभी आत्मगत और अनात्मगत शुभ में भेद बताया जाता है। आत्मगत शुभ वह है जिसकी कोई व्यक्ति अपने लिए इच्छा करता है। अनात्मगत शुभ वह है जो कोई व्यक्ति अन्य व्यक्तियों समाज या समाज के लिए इच्छा करता है। दोनों शुभ में अन्तर तो दिखलाई देता है लेकिन वास्तविकता तो यह है कि जो व्यक्ति का शुभ है वही समाज के लिए भी है इसलिए सर्वोच्च शुभ के लिए दोनों हैं।